

सिद्धयोग विज्ञन कथन

परस्पर हेवो भव ॥
सर्वदः अनिवृत्ति । परमानंदप्राप्ति ॥

सर्वत्र, द्वे क,
पोताना अंतरभां अने सृष्टिभां दृष्ट्यतानो अनुभव करे.
समस्त संताप अने हुः खोनो अंत थाय,
अने परमानंदनी प्राप्ति थाय.

* * *

सिद्धयोग भिशन कथन

दानमात्मज्ञानम् ॥

निरंतर आत्मज्ञान आपता रहेवुं.

शिवसूत्र, ३.२८

